भगवद्भक्ति आश्रम का होवे सब जग में परचार ॥टेक॥
देश नरेश महेश की भक्ति, करो दूर जिससे हो कुमति ।
ईश्वर दे सबको मिले सुमति, जिससे हो उद्धार ।
मिट जाय सब दुःख श्रमका ॥१॥
ग्रामों में आश्रम बनवाओ, विद्यालय वहां पर खुलवाओ ।
लड़का लड़की साथ पढ़ाओ, परदा देवो डार ।
कर दो नाश भरम का ॥२॥
गऊ वृक्षों की नसल बढ़ाओ, इनको कटने से बचवाओ ।
जो तुम भारत को सुख चाहो, करो विद्या परचार ।
है यह काम धरम का ॥३॥
गोबर का तुम खाद बनाओ, डार खेतों में रतन कमाओ ।
चूल्हे में नित लकड़ी जलाओ, होय सुखी नर नार ।
है बुरा काम थापन का ॥४॥
हवादार तुम महल बनाओ, खिड़की झरोखे खूब लगाओ ।
पशुओं से तुम मनुष्य बनाओ, ब्रेन रहा ललकार ।
अब है यह समय करम का ॥५॥